कार्पोरेट श्रेष्ठता की मिसाल

फोर्ड इंडिया को अमेरिकी विदेश विभाग के कॉर्पोरेट उत्कृष्टा कार्यक्रम के लिए दिए जाने वाले पुरस्कार से नवाजा गया है। उसे इस सम्मान का हकदार स्थानीय आर्थिक विकास में मदद करने, कामकाज के सराहनीय तरीके अपनाने, पारदर्शिता बरतने और अंतरराष्ट्रीय कानूनों का सम्मान करने के कारण पाया गया। फोर्ड का मुख्यालय तमिलनाडु के चेंगलपट्टू में है। इसने सन् 2004 में सूनामी के बाद मछुआरों के एक गांव को गोद लिया था। कंपनी ने अपने कर्मचारियों को एचआईवी/एड्स के प्रति जागरूक बनाने और इसका उपचार करने के लिए कार्यक्रम चलाया हुआ है और पर्यावरण संरक्षण में भी यह अहम भूमिका अदा कर रही है।

दिसम्बर 2004 में सूनामी के कहर ने पनैयर पेरिया कुप्पम गांव को तबाह कर दिया था। फोर्ड ने सीआईआई (भारतीय उद्योग परिसंघ) के साथ मिलकर इस बदहाल गांव को फिर से संवारने का बीड़ा उठाया। दोनों के सहयोग से अब गांव में जरूरी विकास कार्य करने और लोगों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए दो साल की एक योजना बनाई जा चुकी है।

उड़ीसा में जब बाढ़ ने कहर ढाया और गुजरात को भूकंप ने हिलाकर रख दिया था, तब भी फोर्ड एक मददगार के रूप में लोगों के आंसू पोंछने के लिए आगे आई। उसने दोनों जगह राहत सामग्री बांटी और पीड़ितों की हर संभव मदद की। गुजरात में सन् 2001 में आए इस भूकंप से अंजार में अंग्रेजी माध्यम का के. जी. माणिक स्कूल तबाह हो गया था। फोर्ड ने इस स्कूल को फिर से बनवाया। कंपनी ने चेंगलपट्टू में अपने प्लांट के आसपास के 50 से ज्यादा गांवों के लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराने के लिए सभी सुविधाओं से युक्त एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्थापित किया है। सन् 1999 में शुरू हुए इस केंद्र में अब तक दो लाख से ज्यादा लोगों का इलाज किया जा चुका है। फोर्ड ने चेन्नई के ट्रॉमा केयर कंसोर्टियम को दो एम्बुलेंस भी दान में दी दैं। इन एम्बुलेंसों से पिछले चार साल के दौरान एक हजार से ज्यादा दुर्घटनाओं और चिकित्सा के तीन हजार से ज्यादा आपातकालीन मामलों में राहत और मदद के काम किए गए। इसके अलावा फोर्ड अपने प्लांट के निकट मराईमलाई नगर और एस. पी. कोली स्ट्रीट के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए ट्यूशन और छात्रवृत्ति का भी एक कार्यक्रम चलाती है।

एचआईवी/एड्स के मामले में फोर्ड ने अपने कर्मचारियों के लिए बाकायदा एक नीति बनाई है। इसके तहत अगर किसी कर्मचारी को एड्स हो जाता है तो उसे पर्याप्त चिकित्सा सुविधा एवं परामर्श मुहैया कराने के साथ ही उसके परिवार को भी समुचित सलाह दी जाती है। और यह काम रोगी के सम्मान को बनाए रखते हुए पूरी गोपनीयता के साथ किया जाता है।

फोर्ड इंडिया ने वाहनों से होने वाले प्रदूषण और परिवहन सुरक्षा पर शोध के लिए आईआईटी के चेन्नई और नई दिल्ली परिसर में हेनरी फोर्ड चेयर्स (पीठ) की स्थापना की है। कंपनी ने पुणे की 'ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया' को अत्याधुनिक टेस्टिंग उपकरण प्रदान किए हैं, ताकि वह अपनी शोध सुविधाओं को बेहतर बना सके और अपने इंजीनियरों को ट्रेनिंग दे सके।

फोर्ड पर्यावरण सुरक्षा के प्रति भी खासी संवेदनशील और प्रतिबद्ध है। उसने अपने प्लांट में इस्तेमाल होने वाले पानी को साफ करने के लिए अत्याधुनिक संयंत्र लगा रखे हैं। इनमें जैविक और रासायनिक विधियों से पानी को साफ किया जाता है। यदि तय मानकों के हिसाब से पानी की सफाई नहीं हो पाई हो तो एक और स्वचालित प्रणाली है जो ऐसे पानी की निकासी को रोक देती है। यह उपचारित जल भी प्लांट से बाहर नहीं छोड़ा जाता। इसे प्लांट परिसर में विकसित की गई ग्रीन बेल्ट की सिंचाई के लिए प्रयुक्त कर लिया जाता है।

कंपनी ने अपने कर्मचारियों में ईमानदारी, एकता और संवाद को बढ़ावा देने के साथ ही किसी का उत्पीड़न न होने देने, कंपनी के सामान के दुरुपयोग को रोकने तथा कर्मचारियों के सशक्तीकरण के लिए एक कड़ी आचार संहिता बनाई हुई है।

फोर्ड इंडिया के तत्कालीन प्रबंध निदेशक एवं प्रेसिडेंट डेविड फ्राइडमैन (दाएं से तीसरे) जून 2005 में मछुआरों को नौकाएं देने के सिलसिले में आयोजित समारोह में सीआईआई अधिकारियों और पनैयर पेरिया कप्पम गांव के लोगों के साथ।

छायाः प्रेम सिंघवी

कारण कम पावर का इंजन बताते हैं। ये ऊंचे दर्जे की कारें थी और इच्छुक खरीददारों को पता था कि यूरोप में ओपल कारों के इंजन बेहतर होते हैं।

महिंद्रा एंड महिंद्रा के साथ शुरूआती गठबंधन के बाद जनरल मोटर्स 1999 में पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी बन गई। हालोल में कारखाना स्थापित करने के बाद 2003 में कंपनी ने अपना सबसे महत्वपूर्ण ब्रैंड शेवी बाजार में उतारा। कुछ समय तक मामूली बिक्री के बाद जनरल मोटर्स की टवेरा एस यू वी ने बाजार में सफलता का परचम लहरा दिया। टवेरा में आज 96 प्रतिशत स्थानीय पुर्जे लगे हुए हैं। जून 2006 तक इसके 3,412 मॉडल बिक चुके हैं और इसे भारत में जनरल मोटर की सर्वाधिक बिकने वाली कार का खिताब मिल चुका है।

जनरल मोटर्स इंडिया के वाइस प्रेसिडेंट पी. बालेंद्रन कहते हैं, ''भारत में 2005 में ऑटो उद्योग के क्षेत्र में 5 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। जनरल मोटर्स के कारोबार में 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई।'' वह गत वर्ष 30,837 कारों की बिक्री की तुलना में इस वर्ष 50,000 कारों की बिक्री की आशा कर रहे हैं।

आम उपभोक्ता के लिए बाजार में पेश की गई एविओ देवू कंपनी का मॉडल है। एशियाई बाजारों के लिए इसका विकास सबसे पहले दक्षिण कोरिया में किया गया। भारत की सड़कों को देखते हुए इसमें आवश्यक सुधार किया गया और कीमत फोर्ड फिएस्टा के बराबर ही रखी गई है।

टवेरा का डीजल चालित मॉडल उपलब्ध है लेकिन जनरल मोटर्स ने ऑप्ट्रा या एविओ का डीजल मॉडल अभी बाजार में नहीं उतारा है। बालेंद्रन का कहना है कि कई डीजल मॉडलों पर विचार किया जा रहा है। अगले वर्ष एक मिनी कार का मॉडल भी बाजार में उतारा जाएगा। मुखर्जी कहते हैं कि भारतीय जेब के मुताबिक दाम पर अमेरिकी ब्रांड की कार का नुस्खा सफल सिद्ध हो सकता है। ''अगर कार का दाम ठीकठाक रखें तो बढ़िया बिक्री हो सकती है।''

निर्यात

भारत से निर्यात की बात की जाए तो बेशक फोर्ड ने बाजी मार ली है। ऑटोमोबाइल क्षेत्र में मजदूरी चीन के समान ही काफी कम है यानी 80 सेंट से एक डॉलर। फोर्ड इंडिया आइकन कार के निर्यात 'किट' तैयार करता है जिनमें अंतिम रूप से तैयार पुर्जे होते हैं और जिन्हें इनके गंतव्य स्थान पर केवल असेम्बल करना पड़ता है। ये स्थान हैं: दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील तथा मेक्सिको। भारत से आइकन के कल-पुर्जे चीन को भी भेजे गए हैं। मैथ्यू का कहना है कि जब घरेलू बाजार में बिक्री के आंकड़े

हालोल, गुजरात में जनरल मोटर्स के संयंत्र में कार उत्पादन का एक दृश्य।